११. विभीषणकृत हनुमत्स्तोत्र

सुदर्शन संहिता के अन्तर्गत विभीषण-गरुड़-संवाद प्रसंग में विभीषण द्वारा अभिव्यक्त प्रस्तुत स्तोत्र विपत्तिनाशक है। फलश्रुति के अनुसार वाचिक कलह, शास्त्रार्थ, हिंसक संघर्ष, असुरक्षित स्थल तथा प्राणभय के अवसर पर भक्तिपूर्वक इस स्तोत्र का संकीर्तन सम्यक् सुरक्षा प्रदान करता है।

स्तोत्र पाठ में विनियोगादि का उतनी दृढ़ता से प्राय: पालन नहीं होता जितना मन्त्रादि में निर्देशित है। कारण यह कि गुणानुवादों से आपूरित स्तोत्र व्यथित हृदय की आर्त पुकार ही है। प्रस्तुत स्तोत्र के सम्यक् लाभ हेतु किसी शुभ मुहूर्त में वीरवर हनुमान का विधिवत् अर्चन-पूजन करें। संकल्प अवश्य ग्रहण करें। तत्पश्चात् घृतप्रेरित दीपक की साक्षी स्थिति में श्रीराम का ध्यान करते हुए संकटमोचन के इस स्तोत्र का इक्यावन बार पाठ करें। तदुपरान्त 'ॐ हं हनुमते नम:' मंत्र से एक माला जप करते हुए हवन करें। हवन सामगी में पूआ मिश्रित करें। स्तोत्र सिद्धि के पश्चात् अवसर आने पर श्रीहनुमान के मन्दिर में स्तोत्र का इक्कीस बार पाठ करें। इससे समस्त रिपुजनित संकट शान्त होता है।

नमो हनुमते तुभ्यं नमो मारुतसूनवे ।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामास्याय च ते नमः ॥१॥

नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे ।
लङ्काविदाहनार्थाय हेलासागरतारिणे ॥२॥

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च ।
रावणान्तकुलच्छेदकारिणे ते नमो नमः ॥३॥

मेघनादमखध्वंसकारिणे ते नमो नमः ।
अशोकवनविध्वंसकारिणे भयहारिणे ॥४॥

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने ।
वनपालशिरश्छेदलङ्काप्रासादभञ्जिने ॥५॥

ज्वलत्कनकवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे ।
सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥६॥

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मपाशनिवारिणे ।
लक्ष्मणाङ्गमहाशक्तिघातक्षतविनाशिने ॥७॥

रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय च ते नमः ।
ऋक्षवानरवीरौघप्राणदाय नमो नमः ॥८॥

परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः ।
विषघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वरघ्नाय च ते नमः ॥९॥

महाभयरिपुघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे ।
परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥१०॥

पयःपाषाणतरणकारणाय नमो नमः ।
बालार्कमण्डलग्रासकारिणे भवतारिणे ॥११॥

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च ।
रिपुमायाविनाशाय रामाज्ञालोकरक्षिणे ॥१२॥

प्रतिग्रामस्थितायाथ रक्षोभूतवधार्थिने ।
करालशैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः ॥१३॥

बालैकब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च ।
विहंगमाय सर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥१४॥

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च ।
दक्षिणाशाभास्कराय शतचन्द्रोदयात्मने ॥१५॥

कृत्याक्षतव्यधाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च ।
स्वाभ्याज्ञापार्थसंग्रामसंख्ये संजयधारिणे ॥१६॥

भक्तान्तदिव्यवादेषु संग्रामे जयदायिने ।
किलकिलाबुबुकोच्चारघोरशब्दकराय च ॥१७॥

सर्पाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे वनचारिणे ।
सदा वनफलाहारसंतृप्ताय विशेषतः ॥१८॥

महार्णवशिलाबद्धसेतुबन्धाय ते नमः ।
वादे विवादे संग्रामे भये घोरे महावने ॥१९॥

सिंहव्याघ्रादिचौरेभ्यः स्तोत्रपाठाद् भयं न हि ।
दिव्ये भूतभये व्याघौ विषे स्थावरजङ्गमे ॥२०॥

राजशस्त्रभये चोग्रे तथा ग्रहभयेषु च ।
जले सर्पे महावृष्टौ दुर्भिक्षे प्राणसम्प्लवे ॥२१॥

पठेत् स्तोत्रं प्रमुच्येत भयेभ्यः सर्वतो नरः ।
तस्य क्वापि भयं नास्ति हनुमत्स्तवपाठतः ॥२२॥

सर्वदा वै त्रिकालं च पठनीयमिदं स्तवम् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥२३॥

विभीषणकृतं स्तोत्रं तार्क्ष्येण समुदीरितम् ।
ये पठिष्यन्ति भक्त्या वै सिद्धयस्तत्करे स्थिताः ॥२४॥

आचार्यों का अभिमत है कि हनुमान ने रावण जैसे शत्रु की नगरी से विभीषण को मुक्ति-मार्ग सुझाया था, उसी प्रकार इस स्तोत्र के पाठ से व्यक्ति कठिनतम शत्रु के षड्यन्त्र से मुक्त हो जाता है। इसका नित्य एक पाठ इसे जीवन्त रखता है।